# मादक द्रव्य व्यसन - एक सामाजिक समस्या के संदर्भ में समाजशास्त्रीय अध्ययन

*सचिन शर्मा* *

नशे के लिए केवल शराब का ही प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि अन्य वस्तुओं जैसे अफीम, गाँजा, चरस, भाँग, कोकीन, मारफीन, माजून, पैथोडीन तथा एस्पिरीन आदि का भी सेवन किया जाता है। ये सभी पदार्थ मादक पदार्थ कहें जाते हैं। मादक द्रव्यों का सेवन जब एक बार किसी कारण से प्रारम्भ कर दिया जाता है तो वह आदत का रूप ले लेते हैं और उन्हें छोड़नें में कई शारीरिक एवं मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मादक पदार्थों के दुरूपयोग को न केवल 'विपथगामी व्यवहार' के रूप में बल्कि एक 'सामाजिक समस्या' की तरह भी देखा जा सकता है। पहले दृष्टिकोण से इसे व्यक्ति के सामाजिक असमायोजन के प्रमाण के रूप में माना जाता है, जबकि दूसरे दृष्टिकोण से इसे वह विस्तृत स्थिति कहा जाता है जिसमें समाज के लिए घातक व क्षतिप्रद परिणाम मिलते हैं। कुछ पश्चिमी देशों में मादक द्रव्यों के सेवन को लम्बे समय से एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या माना गया है, परन्तु भारत में 75 के दशक से ही इसे घातक व दुःसाध्य सामाजिक समस्या समझा जाने लगा है। अब यह कहा जाता है कि भारत न केवल मादक द्रव्यों के लिए मुख्य पारगमन केन्द्र (जहां से मादक द्रव्यों की तस्करी कुछ देशों से अन्य देशों में की जाती है) बन गया है, अपितु मादक द्रव्यों का सेवन भी गम्भीर रूप से बढ़ रहा है।

पूरे विश्व में मादक पदार्थों के सेवन से सबसे ज्यादा किशोर वर्ग जूझ रहा है, हमारा देश भी इसके सेवन अछूता नहीं है। यह पूरे विश्व की गम्भीर समस्या है जिसका प्रभाव भारत जैसे आर्दश देश पर भी अत्यधिक मात्रा में पड़ा है। आज की युवा पीढ़ी मादक पदार्थों के सेवन से अपने लक्ष्य को भूल रही है और वह अपने जीवन को बर्बाद करके अपने माता–पिता को भी दुःख दे रही है। मादक पदार्थों के सेवन से किशोर माता–पिता की आशाओं के विपरीत निकलने से स्वयं को उपहास का पात्र तो बनाते ही है लेकिन परिवार को भी तनाव ग्रसित करते है। युवा वर्ग में मादक पदार्थों के सेवन के प्रति रूझान के अनेकों कारण हैं, जिन्हें दूर करने के लिए समाज के सभी समुदाय का कर्तव्य है कि इस बुराई को जड़ से खत्म करने के लिए युवा वर्ग के इन मादक पदार्थों के प्रति रूझान को खत्म करके समाज में एक अच्छा नागरिक बनाने में सम्पुर्ण मदद करने की कोशिश करें। बिहार में भी मादक पदार्थों का दुरूपयोग हो रहा

* शोध छात्र (समाजशास्त्र), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

हैं यहाँ भी इसका प्रचलन धीरे धीरे बढ़ता ही जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि मादक पदार्थों का उपयोग युवाओं में किस तरह बढ़ रहा है।

मादक द्रव्य का तात्पर्य उन सभी पदार्थों, द्रव्यों तथा औषधियों से है जिनके उपयोग से व्यक्ति नशा, उतेजना, सुख, प्रसन्नता अथवा ऊर्जा का अनुभव करता है और एक बार इनका उपयोग आरंभ करने पर उसका निरंतर उपयोग करने की उत्कट इच्छा पैदा होने लगते हैं। व्यसन (Addiction) एक ऐसी दशा है जो एक व्यक्ति को एक विशेष व्यवहार अथवा वस्तु के उपयोग पर इतना निर्भर बना देता है कि वह शारीरिक और मानसिक सन्तुष्टि के लिए आवश्यक समझने लगता है। अतः मादक द्रव्य व्यसन अल्पकालीन अथवा दीर्घकालीन उन्माद की वह दशा है जो किसी नशीली वस्तु के निरन्तर उपयोग से उत्पन्न होती है।

यह नशीली वस्तु प्राकृतिक रूप में (किसी पेड़ की पत्ती या फूल) हो सकती है या बनायी हुई शराब इत्यादि हो सकती है। इसकी विशेषताएँ इस प्रकार है – (1) नशा करना आदमी को मजबूर कर देता है कि वह नशा करे, इसलिए शराबी व्यक्ति किसी भी साधन से नशीली औषधि प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। (2) नशे में एक प्रवृत्ति यह भी होती है कि इसकी मात्रा लगातार बढ़ायी जाये। (3) नशेबाज का मन (मनोवैज्ञानिक दृष्टि से) और कभी–कभी शरीर भी नशे के प्रभाव के अधीन हो जाता है।'' इस परिभाषा में दोनों प्रकार के नशे आते हैं – शराब तथा अन्य प्राकृतिक पत्तियाँ, जैसे भाँग, गाँजा इत्यादि जो नींद लाने वाली होती हैं। शराब और दूसरे प्रकार के नशों का प्रभाव और इससे उत्पन्न विघटन लगभग एक–सा ही होता है। केवल तीव्रता की गति में भिन्नता होती है। शराब का नशा बहुत तेज होता है।

**अध्ययन का उद्देश्य :–** बिहार में भी मादक पदार्थों का दुरूपयोग हो रहा हैं यहाँ भी इसका प्रचलन धीरे धीरे बढ़ता ही जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि मादक पदार्थों का उपयोग किस तरह बढ़ रहा है। युवाओं में एवं स्कूल–कॉलेजों के छात्रों में इसका प्रचलन किस प्रकार बढ़ा है। मुजफ्फरपुर जिला तथा इसका क्षेत्र चुकि नेपाल से सटे है अतः यहाँ वर्तमान समय में मादक पदार्थों का धंधा चरम सीमा पर है और आज युवाओं में अपना जाल फैला चुका है। इसी बात को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है।

**अध्ययन पद्धति** :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। तथ्यों के संकलन के साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा साक्षात्कार प्रविधि के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

**अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्श :–** प्रस्तुत शोध पत्र उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर मुजफ्फरपुर जिला के शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत किया जा रहा है।

शहरी क्षेत्र के बालूघाट, सिकन्दरपुर तथा बैरिया मुहल्ला से 50 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से किया गया है तथा अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन किया गया है।

**तथ्य विश्लेषण** :– अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है :–

**तालिका संख्या – 1**

**क्या आपको लगता है कि मादक पदार्थों का उपयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हैं ? हाँ/नहीं**

| उत्तरदाता | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 45 | 90 |
| नहीं | 05 | 10 |
| **कुल संख्या** | **50** | **100** |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न **क्या आपको लगता है कि मादक पदार्थों का उपयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हैं** तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 05 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जबाव अपने असहमति में दिया है।

**तालिका संख्या – 2**

**क्या आप मानते हैं कि वर्तमान में स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों में भी मादक पदार्थ का प्रचलन बढ़ता जा रहा है ? हाँ/नहीं**

| उत्तरदाता | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 38 | 76 |
| नहीं | 12 | 24 |
| **कुल संख्या** | **50** | **100** |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न **क्या आप मानते हैं कि वर्तमान में स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों में भी मादक पदार्थ का प्रचलन बढ़ता जा रहा है** तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें जानकारी नहीं हैं।

**तालिका संख्या – 3**

**क्या आपको लगता है कि एक बड़ा गिरोह मादक पदार्थों को बेचने में सक्रिय है, जिस पर कार्यवाई की जानी चाहिए ? हाँ/नहीं**

| उत्तरदाता | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 50 | 100 |
| नहीं | 00 | 00 |
| **कुल संख्या** | **100** | **100** |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न **क्या आपको लगता है कि एक बड़ा गिरोह मादक पदार्थों को बेचने में सक्रिय है, जिस पर कार्यवाई की जानी चाहिए** तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है।

**तालिका संख्या – 4**

**क्या आपको लगता है कि मादक पदार्थों का उपयोग कम उम्र के स्कूली बच्चे भी अधिक करते हैं अतः अभिभावकों को अपने बच्चों पर निगरानी रखनी चाहिए ? हाँ/नहीं**

| उत्तरदाता | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 50 | 100 |
| नहीं | 00 | 00 |
| **कुल संख्या** | **50** | **100** |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न **क्या आपको लगता है कि मादक पदार्थों का उपयोग कम उम्र के स्कूली बच्चे भी अधिक करते हैं अतः अभिभावकों को अपने बच्चों पर निगरानी रखनी चाहिए** तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है।

**तालिका संख्या – 5**

**क्या आपको लगता है कि गम भुलाने के लिए तथा फैशन मानकर भी मादक पदार्थों का उपयोग किया जाता है ? हाँ/नहीं**

| उत्तरदाता | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 30 | 60 |
| नहीं | 20 | 40 |
| **कुल संख्या** | **50** | **100** |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न **क्या आपको लगता है कि गम भुलाने के लिए भी मादक पदार्थों का उपयोग किया जाता है** तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके समर्थन में अपना जबाव दिया है जबकि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके असहमति में अपना जबाव दिया है।

**निष्कर्ष :–** वर्तमान समय में यह जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि मादक पदार्थों का उपयोग दिन प्रति दिन निरंतर क्यों बढ़ता जा रहा है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जब एक बार कोई मादक पदार्थों का लत शुरू कर देता है तो उसे छोड़ पाना मुश्किल हो जाता है। इसके साथ ही जो लोग इस आदत से ग्रसित हो जाते हैं उनकी आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन बदतर होती चली जाती है। जितना वे कमाते हैं उससे कहीं अधिक मादक पदार्थों के पीछे खर्च कर देते हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है और वे कर्ज से लद जाते हैं। इसके साथ ही यह भी पता लगाना इस अध्ययन का प्रमुख उदेश्य है कि कुछ युवाओं मादक पदार्थों के उपयोग के कारण ही उनमें अपराधी प्रवृति देखने को मिलती है।

आज के समय में मादक पदार्थों का सेवन एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। युवाओं का एक बड़ा वर्ग इसकी चपेट में आ गया है। आज मादक पदार्थों के सेवन करके लोग अपना जीवन खराब कर रहें हैं। ये पदार्थ कुछ समय के लिए नशा देते है जिसमें व्यक्ति सुखद अनुभूति होती है, पर जैसे ही नशा खत्म होता है व्यक्ति फिर से उसे लेना चाहता है। कुछ ही दिनों में उसे इन पदार्थों की लत लग जाती है। स्कूल, कॉलेजों में ड्रग्स, नशीली गोलियां चोरी छिपे बेची जा रही है जो युवाओं के भविष्य को नष्ट कर रही है। इन मादक पदार्थों का सेवन करने के बाद जल्द ही इसकी लत लग जाती है । उसके बाद लोग चाहकर भी इसे छोड़ नहीं पाते हैं। बच्चे अपनी पॉकेट मनी को खर्च करके इसे लेने लग जाते हैं। जल्द ही यह सेवन करने वाले व्यक्ति को पूरी तरह से बर्बाद कर देती है। आज देश के कई राज्यों में इन मादक पदार्थों ड्रग्स को चोरी छिपे बेचा जा रहा है।

**संदर्भ सूची** :


- आहुजा, राम (2005); ''भारतीय सामाजिक समस्याएँ'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर.
- पचौरी, जे० पी० (1999), 'ड्रग एब्यूज एण्ड एल्कोहलिस्म इन इंडिया', एम०टी०सी० प्रिन्टर्स, बरेली
- फुकन, आर० एस० (2017), ड्रग की समस्या : पंजाब और दिल्ली में सरकार का सर्वेक्षण. भारत सरकार नई दिल्ली.
- मदन, जी० आर० (2002) भारतीय सामाजिक समस्याएँ, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली.
- सिंह, एम० एन० (1999), 'ड्रग्स तथा आधुनिक समाज', विवेक प्रकाशन, दिल्ली.


***